जो रास्ता चुना नहीं मैंने

-रॉबर्ट फ्रॉस्ट

वहाँ दोराहा था पीले जंगल की ओर जाता
मैं असमर्थ था एकसाथ दोनों रास्तों पर चलने से
ऐसा पथिक नहीं था मैं, मैं वहाँ खड़े खड़े देखता रहा उस दोराहे को
और देखता रहा उस रास्ते को कई दूर तक वो रास्ता जो मुड़ रहा था दूर छिपी झाड़ियों में कहीं;

फिर मैने दूसरा रास्ता चुना, संभावित दोनो ही रास्ते सही थे,
और शायद बेहतर दावा करते हुए,
क्योंकि वह रास्ता घास युक्त था और घिसा भी नहीं;
हालांकि जहाँ तक वहाँ से गुज़रने की बात थी
वास्तव में लगभग दोनो रास्ते एक जैसे घिसे दिखाई देते,

और उस सुबह तो दोनो एक समान रूप से लगे
बिना कुचले पत्तों से ड़के दोनो ही रास्ते
आह ,मैने वो पहला रास्ता छोड़ दिया किसी और दिन के लिए !
यह जानते हुए कि एक रास्ता मिल जाता है अक्सर एक और रास्ते से,
मुझे संदेह है कि मुझे वापसी करनी चाहिए कभी।

एक आह भरकर कहूंगा मैं
भविष्य में
इस दोराहे के बारे में जो था जंगल में, जहाँ मैंने वो रास्ता चुना
जिस पर कभी-कभार ही चला था कोई
जिससे मैं बन गया नितान्त
एक अलग आदमी।

अनुवादः

डॉ. रविया गुप्ता

लेक्चरर

पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग

जम्मू विश्वविद्यालय